आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत | विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 15 | उदयपुर गुरूवार 15 अगस्त 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

रक्षाबंधन पर भक्त सरवण पूत की याद

- डॉ. तुक्तक भानावत -

जीवन को खुशहाल, समरस, सरस तथा सन्तुलित बनाने के लिए समय-समय पर हमारे यहां विविध त्यौहार, उत्सव, अनुष्ठान, पर्व आदि मनाये जाते हैं। ऋतुओं के हिसाब से भी इन पर्वों में सन्तुलन सौष्ठव निहित है।

कई पर्वोत्सवों के साथ ऐसी कुछ घटनाएं घटित हुईं मिलती हैं जिनसे कई तरह की सीख मिलती है। सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक सदाशयता तथा पारिवारिक प्रेम-निष्ठा के कारण भी इनका रचाव देखने को मिलता है। जीवन को संयमित समदर्शी तथा समताभावी बनाने के दृष्टिकोण से भी कुछ व्रत-अनुष्ठान बनाये गये हैं। अधिकांश व्रतानुष्ठान तो महिला शक्ति समुदाय से सम्बन्धित ही हैं। इनमें व्यष्टि की कम, समष्टि की भावना-धारणा का प्राबल्य मिलता है।

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को राखी अथवा रक्षाबन्धन का त्यौहार बड़े व्यापक रूप में सर्वत्र ही मनाया जाता है। इसमें मूलत: रक्षा का भाव है। आपसी सहयोग, सौहार्द, भाईचारा तथा वचनबद्धता का भाव सर्वोपरि रहा। ऐसी कई घटनाएं मिलती हैं। विदेशी आक्रान्ता से अपनी रक्षा करने के लिए रानी कर्मावती ने मुगल बादशाह हुमायू को राखी भेजी थी। हुमायू ने उस राखी की लाज रख कर्मावती की रक्षा की थी।

ऐसी ही रक्षा राखीबन्ध भाई आल्हा ऊदल ने सन् 1182 की श्रावणी पूर्णिमा को बुन्देलखण्ड के राज्य महोबा के सरोवर कीरत सागर तट पर बहिन बनी राजकुमारी चन्द्रावलि की की थी। ऐसे और भी उदाहरण हैं जब दो भिन्न परिवार, जाति, कुल के होते हुए भी निष्कलुश स्नेह-बन्धन में बन्ध एक-दूसरे के शील और मान की रक्षा की और अस्मिता को बचाये रखा।

इससे लगता है कि यह त्यौहार किसी जाति वर्ग अथवा समाज सम्प्रदाय के बन्धन में बन्धा नहीं है। रक्षासूत्र जिन कलाइयों में बान्धे जाते हैं, बान्धने तथा बन्धवाने वाले अटूट स्नेह में बन्ध जाते हैं। जिन अन्य उपकरणों के भी जो सूत्र बान्धे जाते हैं उसके पीछे भी पारिवारिक ऋद्धि-सिद्धि आरोग्य तथा कल्याण की भावना मुख्य रहती है। वेद, पुराण, विविध धर्मों तथा लोक-मान्यताओं में राखी सम्बन्धी अनेक मान्यताओं का जिक्र मिलता है किन्तु कालान्तर में इसका विशेष महत्व भाई-बहिन के प्रगाढ़ स्नेह बन्धन से जुड़ गया। इसके साथ ही श्रवण से इसका लौकिक पक्ष जुड़ गया।

इस दिन बड़े भौर में महिलाएं

घर के दरवाजों के दोनों ओर थोड़ी ऊंचाई पर खड़िया से पुताई करने के उपरान्त प्रतीकात्मक रूप में श्रवण के विविध अंकन उकेरती हैं। मनुष्य कृतियों के अलावा सातिया नारेळ के प्रतीक भी शोभा पाते हैं।

ये मण्डन, माण्डने गेरू, कुमकुम्, मेंहदी या फिर हड़मची-हिरमिच से माण्डे जाते हैं। महिलाओं की दक्षता के अनुसार इनका आंकड़-बांकड़ उकेरन बड़ा ही आकर्षक तथा कलात्मक होता है। इनमें कोई सधासधाया नापजोख नहीं मिलता किन्तु माण्डने वाली अपनी भावनात्मक परिकल्पनाओं में जो सहज रूपांकन बनाती हैं वे देखने वाले की कल्पनाओं में अनेक नई उद्भावनाओं से सौंदर्यपूरित लगते हैं।

राखी का सूत्र सर्वत्र पूजाघर, रसोईघर, शयनघर, बैठक स्थल, मुख्य द्वार, नाल तथा प्रत्येक किंवाड़ के सांकले कुण्डे और दवात-कलम के भी बान्धा जाता है। दैनिक उपयोग की महत्वपूर्ण चीजों यहां तक कि ताला-कूंची, मूसल, हमामदस्ता, सूप, टोपले के भी कच्चे धागे से निर्मित फूंदे-फूंदी बान्धे जाते हैं। तब राखियां भी भोडल वाली होती थी।

श्रवण के सम्बन्ध में विविध कथाएं प्रचलित हैं। इनमें एक कहानी मेरी बड़ी भुआ सोवन जीजां (93) ने इस प्रकार सुनाई-

श्रवण के एक बड़ी बहिन थी जिसका विवाह पास के गांव में कर दिया गया। श्रवण उससे मिलने गांव के बाहर जा रहा था कि जोर की प्यास लगी। वह पास की बावड़ी में उतरा किन्तु पैर फिसल गया और वह पानी में जा डूबा और मृत्यु को प्राप्त हुआ।

थोड़े ही दिनों में उस बावड़ी में कनेर की बेल फैली। इतनी लटपट फैली कि पूरे कुए को ढक दिया। राखी का दिन आया तब श्रवण की बहिन भाई को राखी बान्धने चली। उसी बावड़ी में वह पानी पीने उतरी। देखा कि कनेर की बेल की जगह सुन्दर-सुन्दर फूल खिले हुए हैं। ऐसा उसने पहलीबार ही देखा तो भारी अचरज हुआ।

उस बेल से उसने एक फूल तोड़ा। तोड़ते ही बेल से आवाज सुनाई दी, 'तू मेरे राखी बान्धने आई हो और कलाई तोड़ ले जा रही हो।' यह सुनते ही वह डरी। भागी-भागी गांव पहुंची। देखते-देखते पूरे गांव के लोग वहां इकट्ठे हो गये। बहिन ने सबके सामने फूल तोड़ा तो वही आवाज सुनने को मिली।

यह खबर जब श्रवण के अन्धे माता-पिता ने सुनी को अत्यन्त दुखी हुए। उन्होंने बड़े ही करुण क्रन्दन में भगवान से हाथ जोड़ विनती की - 'आज के दिन किसी भी बहिन को अपने भाई से विलग मत करो। बिछुड़े भाई-बहिन को पुन: मिलादो।' भगवान ने उनकी विनती सुन श्रवण को जीवित कर दिया।

श्रवण ने ऐसा चमत्कार देख, कारण पूछा। आवाज मिली, 'इन्हें चारों धाम का तीर्थाटन कराओ।' श्रवण ने बहिन के घर जाकर राखी बान्धी। कांवर बनवाई और उसमें माता-पिता को बिठाकर तीर्थयात्रा का श्रीगणेश किया। चलते-चलते एक जंगल में पहुंचे। वहां माता-पिता को प्यास लगी। श्रवण पानी की तलाश में

नदी किनारे पहुंचा। वहां बहते पानी से लोठा भरना चाहा।

पानी भरने की आवाज सुनकर राजा दशरथ ने जो शिकार की तलाश में थे, शब्द भेदी बाण चलाया जो श्रवण को जा लगा। नदी किनारे दशरथ ने जब श्रवण को बुरी तरह तड़फते देखा तो उन्हें घोर पछतावा हुआ।

श्रवण ने दशरथ को अपने माता-पिता को पानी पिलाने की भलावण दे प्राण त्याग दिये। दशरथ उनके पास पहुंचे किन्तु वे पदचाप से समझ गये कि वह श्रवण नहीं है। घबराये और बुरी तरह पीड़ित हुए उन्होंने श्राप देते कहा, 'जिस तरह हम अपने पुत्र के वियोग में प्राण विसर्जित कर रहे हैं उसी तरह तुम भी एक दिन अपने पुत्र के वियोग में अपना शरीरान्त करोगे।'

रक्षाबन्धन के दिन श्रवण नक्षत्र भी होता है। श्रावण, श्रवण पुत्र और श्रवण नक्षत्र। इस दिन श्रवण ही श्रवण सब ओर देखने-सुनने-समझने को मिलता है।

हर घर में, घर-घर में संतति ऐसी हो जो 'सरवण पूत' की तरह आज्ञाकारी एवं श्रद्धाशील बने रहकर अपने माता-पिता की सेवा-चाकरी करे।

कलक्टर आनंदी को राज्यस्तरीय सम्मान

जिले में सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, नवाचारों से बालिका सशक्तिकरण तथा नरेगा व पीएम आवास योजना के माध्यम से गरीब वर्गों के उत्थान की योजनाओं को सफल बनाने के लिए जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बेस्ट कलक्टर के रूप में उदयपुर जिला कलक्टर श्रीमती आनंदी को राज्य स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में सम्मानित किया।

उल्लेखनीय है कि जिला कलक्टर की पहल पर जिले में पहली बार ग्रामीण परिवारों की आजीविका बढ़ाने के लिये बाघपुरा में सरस डेयरी, आरसेटी व पशुपालन विभाग के सक्रिय सहयोग के साथ राजीविका परिवार से जुड़ी बहनों के लिये बाघपुरा सीएलएफ पर प्रदेश के पहले बकरी दूध संग्रह केन्द्र की शुरूआत की गई।

उदयपुर में संभागीय आयुक्त द्वारा ध्वजारोहण

उदयपुर। उदयपुर संभाग मुख्यालय का मुख्य स्वाधीनता दिवस समारोह गांधी ग्राउण्ड में आयोजित हुआ जहां मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त विकास सीताराम भाले ने ध्वजारोहण किया। राष्ट्रगान

के पश्चात मुख्य अतिथि ने परेड निरीक्षण किया। समारोह में अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रशासन) नरेश बुनकर ने माननीय राज्यपाल के संदेश का पठन किया। समारोह में मुख्य अतिथि ने उल्लेखनीय सेवाओं के लिए 65 व्यक्तियों को प्रशंसा पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह में मूक-बधिर उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने व्यायाम प्रदर्शन में हैरतंगेज प्रदर्शन कर दर्शकों की तालियां बटोरी वहीं सेंट ग्रेगोरियस उच्च माध्यमिक विद्यालय तितरड़ी के छात्र-छात्राओं की देश प्रेम की धुनों पर आधारित व्यायाम प्रस्तुति भी सराहनीय रही। सेंट मेरिस उच्च माध्यमिक विद्यालय तितरड़ी के छात्र-छात्राओं ने संगीतमय नृत्य की प्रस्तुति दी जिसमें समूचे भारत देश की विविधरूपा संस्कृति की अनूठी झलक का दिग्दर्शन हुआ। परेड कमाण्डर राकेश कुमार के नेतृत्व 18 विभिन्न टुकड़ियों ने परेड में भाग लिया एवं मार्च पास्ट की सलामी दी।

समारोह में उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा, नगर निगम महापौर चंद्रसिंह कोठारी, उदयपुर डेयरी चेयरमैन डॉ. गीता पटेल, पुलिस महानिरीक्षक विनिता ठाकुर, जिला पुलिस अधीक्षक कैलाशचंद्र विश्नोई, जिला परिषद के सीईओ कमर चौधरी, नगर निगम आयुक्त अंकितकुमार सिंह, अतिरिक्त संभागीय आयुक्त एल. एन. मंत्री, रामजीवन मीणा, टीएडी की अतिरिक्त आयुक्त श्रीमती अंजलि राजौरिया, अतिरिक्त जिला कलक्टर नरेश बुनकर व संजय कुमार, गिर्वा एसडीएम लोकबंधु, जिला परिषद के एसीईओ मेघराज मीणा सहित जिले के विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। समारोह का संयोजन राजेन्द्र सेन एवं श्रीमती रागिनी पानेरी ने किया।

इसी प्रकार संभागीय आयुक्त निवास एवं विभागीय प्रांगण में संभागीय आयुक्त विकास सीताराम भाले ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। जिला कलक्टर कार्यालय में अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रशासन) नरेश बुनकर ने ध्वजारोहण किया। सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय में उपनिदेशक कमलेश शर्मा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

नारायण सेवा में ध्वजारोहण

नारायण सेवा संस्थान के हिरण मगरी सेक्टर-4 स्थित मानव मन्दिर में ध्वजारोहण संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव' ने किया। बलीचा स्थित निराश्रित बालगृह में संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने ध्वजारोहण किया। दोनों ही स्थानों पर दिव्यांग एवं मूक-बधिर बालकों ने देशभक्ति गीत एवं नृत्य की रंगारंग प्रस्तुतियां दी।

विद्यापीठ में झण्डारोहण

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विद्यालय के कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने माणिक्यलाल वर्मा श्रमजवी महाविद्यालय, प्रतापनगर स्थित विद्यापीठ के मुख्य प्रशासनिक भवन एवं डबोक परिसर में स्वाधीनता दिवस पर तिरंगा फहराया। पंचायत यूनिट परिसर डबोक में कुलपति सारंगदेवोत ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर छात्र- छात्राओं ने देशभक्ति गीतों व नृत्य पर अपनी आकर्षक प्रस्तुतियां दीं।

जिंक्र में ध्वजारोहण

हिन्दुस्तान जिंक्र के प्रधान कार्यालय में मुख्य अतिथि कंपनी सेक्रेट्री राजेन्द्र पण्डवाल ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर जिंक परिवार के परिजनों एवं बच्चों ने कविता, संगीत एवं देशभक्ति गीतों की प्रस्तुतियां दी। जिंक के सिक्यूरिटी कार्मिकों द्वारा मार्च पास्ट की सलामी दी गई। इसके अलावा कंपनी की सभी इकाइयों में स्वतंत्रता दिवस हर्षोउल्लास से मनाया गया।

एमएमपीएस में झंडारोहण

महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल में मुख्य अतिथि कर्नल कुमारसंजय सिंगनल्स ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर छात्रों ने देशभक्ति से

ओतप्रोत सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी। प्राचार्य संजय दत्ता ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट किया। संयोजन प्रियंवदा शास्त्री, दिलीपकुमार शर्मा एवं हेमन्तकुमार जैन ने किया। संचालन मुमुक्षा पालीवाल, अनन्या गनोत्रा एवं भव्य दोशी ने किया।

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

स्वाधीनता दिवस
के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

MEMBER J.K. ORGANISATION
JK TYRE & INDUSTRIES LTD.
SELECTED Superbrand INDIA 2009-10 CONSUMER VALIDATED

स्मृतियों के शिखर (82) : डॉ. महेन्द्र भानावत

कर्त्तव्यनिष्ठ कौशल से कीर्तिवान बने ए. एस. मेहता

सभी पोतड़ों के रईस नहीं होते और न सभी पूतों के पांव पालने में ही नजर आते हैं लेकिन कुछ बिरले होते हैं जो साधारण होकर भी असाधारण हुए अपने कर्त्तव्यनिष्ठ कौशल से कीर्तिवान सबके चहेता बन जीवन को सार्थक करते हैं। अमरसिंह मेहता उर्फ ए. एस. मेहता उनमें एक अनुकरणीय उदाहरण हैं।

धन की पोटली देखने वाले संस्कारधनी हों, यह कतई जरूरी नहीं पर जो माताएं अपनी बंद मुट्ठी में लाखेणी बड़प्पन लुकाये अपने पूत को किसी की कुदृष्टि से बचाये रखती हैं, किसी फंदफांदे का शिकार नहीं होने देतीं, हर पल कुल देवों की छत्तर छाया बनी रहने की मंगल आशा लिये लाड़ले सपूत की लम्बी डोर नापती हैं, समुद्र पार तक का दीपक छोड़ती हैं, माणक मोती के फूल उघाड़ती हैं, वे धन भाग होती हैं।

बच्चे ऐसे ही पड़ते-दड़ते बड़े नहीं हो जाते। अपने सैंकड़ों सपनों को हालर हुलर करती हुई मां समृद्ध होती है। यही समृद्धि बालपन को संस्कारित करती मां मौका पड़ने पर अपने टाबर को टाबरी होने का भ्रम दिये कंकर से शंकर तथा शिला से शालिग्राम बनाती है। मां की इस खूबी से हर बच्चा खबरदार होता है। अपने बचपन में ही नहीं, आज भी मेहताजी अपनी मां से वही ममता और स्नहेशकुन पाते हैं। भावुक मन से कहते हैं- 'मां तो मां ही होती है। उसकी तुलना किसी अन्य से नहीं की जा सकती। मां के सम बस मां ही है।'

यह सुखद संयोग है कि हमारे परिवार में अमरसिंहजी सबसे बड़े जंवाई हैं। बड़े भाई डॉ. नरेन्द्र भानावत जिन्हें मैं दादाभाई कहता था, अकेले पुरुष थे। बड़ी बहन सोवन जीजां (93) सुनाती है कि उसके बाद मां के चार सन्तानें हुईं पर सभी अकाल मौत चली गईं। ऐसी स्थिति में भाई साहब को अम्बामाता के नाम की नथ पहनाकर पहले 'नाथी' और फिर 'नाथू' नाम रखा। उनके तीन वर्ष बाद मेरा जन्म हुआ सो नाथू की तुक में मेरा नाम 'मीठू' रखा। मीठू का अर्थ तोता होने से लाड़प्यार में मुझे कहते, 'बोल मीठू, चत्रगोठी, दूध रोटी।'

उपलब्धियां कहकर नहीं आतीं। जब आती हैं तो वे बरसाती बून्दों की तरह अनायास ही बरस पड़ती हैं। भाई साहब सदैव समय के खबरदार पहरुए रहे। उनमें समय की आहट, उसकी चाल तथा चलन के साथ गति बनाये रखने की अनूठी क्षमता थी सो वे हर समय ही, हर प्रतियोगिता वाली होड़ में सर्वोच्च श्रेष्ठ बने रहे। जब नाथूराम गोड़से द्वारा गांधीजी की हत्या कर दी गई तो उन्होंने अपना नाथू नाम छोड़ 'नरेन्द्र' कर लिया और मुझे भी मीठू से 'महेन्द्र' बना दिया।

यही नहीं, प्रारम्भ में उन्होंने अपने बच्चों के नाम अरूण, अनिल और अलका रखे किन्तु उनके एक खास भायले ने उन्हें नेक सलाह दी कि जब कभी भी ये बच्चे कहीं इन्टरव्यु देने जायेंगे तो सबसे पहले इन्हीं का नाम पुकारा जायेगा जिससे ये घबरा जायेंगे सो भाई साहब ने तत्काल तीनों के नाम बदल संजीव, राजीव और तृप्ति कर दिया।

इन तीनों में पढ़ने में कोई वल नहीं रहा। सभी अव्वल रहे। तृप्ति ने केमेस्ट्री में एम. एससी किया तब उसके सगपण के लिए सुयोग्य वर की ढूंढ शुरू की गई। बड़ीसादड़ी में हमारी दो भुआएं और भाई साहब के साढ़ू रहते थे सो उन्होंने वहां रह रहे सुल्तानसिंहजी मेहता के सुपुत्र अमरसिंहजी के लिए कहा। 'सग्गा में साढ़ू और भोजन में लाड़ू' कहावत को चरितार्थ करते भाई साहब ने वहां तृप्ति का सगपण तै कर दिया।

भाई साहब जानते थे कि किसी भी परिवार की उपलब्धि धन दौलत नहीं है। शिक्षा को ही वे सबसे बड़ी रौनक और ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि मानते थे। धन तो हमारे परिवार ने भी नहीं देखा। अमरसिंहजी चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट थे। एक कम्पनी में भी सेवारत थे।

भाई साहब ने स्वजनों के साथ सलाह मशविरा किया। मैंने 8वीं कक्षा में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की पढ़ी 'रंग में भंग' खण्डकाव्य की एक पंक्ति 'योग्य से ही योग्य का सम्बन्ध होना योग्य था' का उल्लेख कर वातावरण को सबरंग स्वीकृति वाला बना दिया। फलस्वरूप 27 फरवरी 1984 को तृप्ति के पीले हाथ कर दिये। इसे भागजोग ही कहना होगा कि बाद में मेरी दोनों बालकियों, डॉ. कविता तथा डॉ. कहानी का विवाह भी मेहता परिवार में ही हुआ। किसी विशेष उत्सवी माहौल में जब सब एकत्र होते तो मां डेलूबाई मसखरी पर उतर आतीं और रोळां कर कहतीं, 'मेहता खानदान नहीं होता तो मेरी तीनों छोरियां कुंवारी ही रह जातीं।' विधि की यह विडम्ब छलना ही रही कि भाई साहब असमय ही 04 नवम्बर 1993 को हमें छोड़ चले। उनके बाद आठ माह के भीतर ही भाभी डॉ. शान्ता भानावत और मां भी हम सबसे किनारा कर गईं।

अमरसिंहजी ने अपने जीवन का विधिवत सेवाकाल 1986 में कांकरोली में स्थापित जेके टायर में एकाउन्टेंट के रूप में प्रारम्भ किया। 'स्लो एण्ड स्टडी विन्स द रेस' का मंत्र साधते वे उसी प्लांट में हेड ऑफ कॉमर्शियल, फिर जनरल मैनेजर, फिर कॉर्पोरेट कन्ट्रोलर पद पर अपना प्रभावी दायित्व वहन करते 2007 में मार्केटिंग डायरेक्टर और 2011 में हेड ऑफ मार्केटिंग एण्ड सेल्स बनाये गये। इसी दौरान उन्हें जेके पेपर का चार्ज दिया गया। यह वह समय था जब देश में कागज उद्योग कम मुनाफे का उद्योग था और सर्वाधिक समस्या कच्चे माल की थी।

मेहताजी के लिए यही सबसे बड़ी चुनौती थी। उन्होंने बहुत कम समय में ही जान लिया कि कम से कम लागत में अच्छा से अच्छा उत्पादन कैसे हो सकता है जो उचित मूल्य में उपलब्ध हो सके और उत्पादन की श्रेष्ठ गुणवत्ता के साथ कम्पनी की साख भी बढ़ा सके।

कागज उद्योग मूलतः लकड़ी पर निर्भर है। इसकी कमी के कारण हर समय उसका भाव बढ़ा रहता था। इसके लिए उन्होंने पौधे तैयार करने वालों से गम्भीर मंत्रणा की। उनकी समस्याएं जानीं और कैसे अधिकाधिक पैदावार बढ़ाई जाय, इस पर विशेषज्ञों के साथ चर्चा-मंथन कर दो वर्ष में ही चार हजार हेक्टर से बढ़ाकर दस हजार हेक्टर तक की पैदावार बढ़ाई और अगले समय अर्थात् वर्ष 2015 में यह उत्पादन पन्द्रह हजार हेक्टर तक बढ़ा दिया। इस अकल्पनीय उपलब्धि से कम्पनी की साख तो बढ़ी ही पर अधिसंख्यक किसान भी लाभान्वित हुए। उनके श्रम-कौशल में वृद्धि हुई। उनका हौंसला बढ़ा। कम्पनी ने उनके द्वारा उत्पादित सामग्री खरीदकर आर्थिक सहयोग के साथ कई सारी सुविधाएं सुलभ कर हर सम्भव साथ दिया। कमाया सबने, किसानों ने, कम्पनी ने, छोटे-बड़े व्यापारियों ने, श्रमशील मजदरों ने। सभी खुश, सब ओर खुशहाली व्याप्त हो गई।

नेक इरादा और सबका भला चाहने वाला सदैव बरकत पाता है और अन्यों को भी बरकत-बढ़ोतरी देता है। इसी सोच से कम्पनी को अप्रत्याशित लाभ मिला। उसका बाजार विकसित हुआ। अनेक और प्रान्त जुड़े। नई मशीनों की स्थापना से दो गुना उत्पादन क्षमता वाली कम्पनी 1500 करोड़ से बढ़त कर 3000 करोड़ पहुंची और 49 करोड़ से 400 करोड़ नेट प्रोफिट वाली बनी। मेहताजी द्वारा कम्पनी सम्भालने से मात्र दो वर्ष के काल की यह उपलब्धि कम्पनी के उच्च प्रबंधन को भी विस्मित कर गई।

इसके बाद तो एक से बढ़कर एक, अनेक उपलब्धियां कम्पनी के खाते में दर्ज होती गईं। मेहताजी के पगफेरे से कम्पनी निहाल हो गई। इससे मेहताजी जेके पेपर यूनिट के भरोसेमंद परिजन ही हो गए। उनका कारवां आगे की ओर निरन्तर बढ़ता, चलता रहा। अथक पथिक की तरह मेहताजी के प्रयास परवान चढ़ते रहे।

इस समय जेके पेपर की तरह सिरपुर पेपर मिल्स भी पेपर उद्योग में एक जाना पहचाना नाम था किंतु भाग्य पलटते देर नहीं लगती सो उसकी उल्टी गिनती शुरू हो गई और वह अनेक समस्याओं और आर्थिक तंगियों से जूझने लगी। मेहताजी ने अपने प्रबंधकों से सलाह मशविरा कर उस कम्पनी को अपनी कम्पनी में मिला लिया। आज तो जेके पेपर यूनिट देश की टोप कम्पनी बनी हुई है। उसका उद्योग दिन दूना रात चौगुना श्रीवृद्धि लिये है।

हिम्मत और हौंसला रखने से व्यापार में लक्ष्मी का वास बना रहता है। मेहताजी के प्रयास इसके जीवन्त लक्ष्य-प्रमाण हैं। यही कारण है कि वे अनेक कम्पनियों, ट्रस्टों तथा शोध समितियों-संस्थानों में अपनी प्रभावी हैसियत रखते हैं। इस क्षेत्र में उनकी लोकप्रियता एक होनहार विचारक, दक्ष सलाहकार, प्रभावी वक्ता तथा नवोन्मेषी प्रज्ञावान शोधकर्त्ता के रूप में सम्मानजनक आदरणीय बनी हुई है। ग्रामीण विद्यार्थियों को उनके जीवन निर्माण में हर सम्भव सहयोग, सहायता एवं सलाह परामर्श हेतु मेहताजी समय-समय पर कार्यशालाएं आयोजित करते रहते हैं। पिछले दस वर्षों में उन्होंने राजस्थान, दिल्ली, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश में अनेक कार्यशालाओं द्वारा बालकों का जीवन संस्कारित कर उन्हें आदर्श एवं उत्कृष्ट वणिक वृत्ति वाले नागरिक बनने की प्रेरणा दी है।

मेहताजी के लिए मैंने जब अपने भतीजे डॉ. संजीव भानावत से कुछ लिखने को कहा तो उसने अपनी टिप्पणी में यह ठीक ही लिखा- 'बड़ीसादड़ी जैसे छोटे से गांव से अपना बचपन बिताने के बाद गांव से बाहर निकल अपनी योग्यता एवं प्रतिभा के बल पर, सीमित संसाधनों के बावजूद अपने लक्ष्य के लिए संकल्पबद्ध रहते उन्होंने जिस तरह राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अपनी पहचान बनाई वह उनके परिश्रम का ही परिणाम है।

उन्होंने जिस भी कम्पनी में काम किया वहां अपनी कार्यक्षमता और नया करने की ललक के साथ, कल्पनाशील ढंग से, कम्पनियों की नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के कारण प्रतिस्पर्धी कम्पनियों में विशिष्ट पहचान दिलाई। सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति श्री मेहताजी अभिमान-भावना से सदा ऊपर रहे। परिवार के प्रति उनके मन में सदैव सहयोग का भाव रहा। पिता-पुत्र-पति-भाई आदि अनेक रूपों में उन्होंने अनुकरणीय जीवनमूल्यों के आदर्श हमारे सामने रखे।'

उच्च पदों पर रहते आदमी उच्च बना रहे, यह मुश्किल है। वह साधुमना, संयमी, संस्कारवान और बड़ेरों के प्रति विनयशील शीलव्रत बना रहे, यह और मुश्किल है। मेहताजी में अपने पूर्वजों द्वारा हस्तांतरित जैनत्व के संस्कार कूट-कूट कर भरे हैं।

संयमित जीवन, संयमित खानपान और सात्विक चर्या उनके उज्ज्वल जीवन और पारदर्शी मन की यशस्वी साख भरते हैं। उनकी आत्मजा पारुल विगत कुछ वर्षों से लंदन के केम्ब्रिज में अध्यापन कार्य कर रही है जबकि पुत्र भव्य आगे उच्च अध्ययन के लिए विदेश जाने की तैयारी में है।

मैंने कई जगह जंवाइयों के तेवर और ठाठ ठसक देखे हैं। उनके नाज़ नखरों की अनेक दास्तानें याद करने पर गेहूं की सूखी बालियों की तरह मुझ में खरखरा भर देती हैं लेकिन हमारे परिवार में हमने कभी उन बालियों का डंक तक महसूस नहीं किया। दूध-पानी की तरह सभी जंवाई हमारी ही तरह 'अपन सब' होते रहे।

उदयपुर जब भी मेहताजी का आना होता है वे सभी रिश्तेदारों के अलावा अपने खास भायले श्याम सिसोदिया से अवश्य मिलते हैं जिसने सीए की परीक्षा के दौरान रात-रात भर उनके साथ जागकर पूरा कोर्स-वाचन किया जब उनकी आंखें दुख आईं और डाक्टर द्वारा पढ़ने की सख्त मनाई थी। वे कहते भी हैं, 'आज वे जो कुछ भी हैं सिसोदिया के कारण हैं।'

एक दिन मैंने अपने घर में तुक्तक-रंजना के साथ शब्दांक, अर्थांक से कहा कि ब्लेकबोर्ड पर मैंने एक पेरा लिखा है। इसके हर वाक्य में कोई-न-कोई कहावत-मुहावरा या कि महत्त्वपूर्ण कथन छिपा है। उसे खोज निकाल अपनी बुद्धि-परीक्षा दो। वह लेखन था- मेहताजी का जीवन-सूत्र कभी बिखराव लिये नहीं रहा। एक बुनी हुई रस्सी की तरह नौ-दो ग्यारह नहीं होकर एक-एक ग्यारह बना रहा। उन्होंने कभी अपनी ढपली और अपना राग नहीं अलापा और न थोथा चना बाजे घना ही बने। एक सादा जीवन उच्च विचार की मशाल लिये वे चिड़िया की तरह आकाशीय उड़ान तो भरते रहे किन्तु यह न भूले कि उसका दाना धरती के पास है। भीड़ भरे बाजार में उन्होंने अनेकों को लपक लेते देखा किन्तु वे सदैव पांव पसारने से पूर्व अपनी छोर देखना नहीं भूले।

सच तो यह है कि काल करे सो आज नहीं अपितु 'अब' के विश्वासी बने आज भी वे अपना पथ प्रशस्त किये गतिमान-मतिमान बने हुए हैं। जेके पेपर की सराहना इसलिए भी की जानी चाहिये कि पूरे देश को हरीतिमा देने के लिए उसने संकल्पपूर्वक एक अभियान ही चला रखा है। उसके द्वारा किये जाने वाले हर किट पर लिखा रहता है- 'वी प्लान्ट ए ट्री फॉर एवरी पेक यू बाय।'

आज जब मैं अपने पिछले व्यतीत-अतीत कालखण्ड को निहारता हूं तो अभाव भरे आंसुओं के ओटे के साथ उपलब्धियों की अलळ खलळ बहती नदी नजराना देती लगती है। काश! वे सब होते जो असमय ही अपना समय लेकर चले गये। संगिनी प्रीतम होती जो प्रिय बन तम दे गई। आत्मज मुक्तक होता तो उसकी बड़रि अंखियन निरखि अपनी अंखियन को सुखी करता।

शब्द रंजन
उदयपुर, गुरूवार 15 अगस्त 2019

सम्पादकीय

लोकोन्मुखी तंत्र और समय का मंत्र

प्रधानमंत्री नरेन्द्रभाई मोदी भारतीय लोकतंत्र में निवास कर रहे लोक के सच्चे जनतांत्रिक पहरुए के रूप में अपनी पौरुषधनी पहचान देने वाले उन बिरले सपूतों में मान्य हुए हैं जिन्होंने अपनी पार्टी की छवि को बरकरार रखते अपना निज स्थापित किया है। यह सामान्य कथन नहीं है। उनका इतना साथ यहां की लोकनिवासिनी जन-गंगा ने उनके 'सबका साथ सबका विकास' आह्वान का सम्पूर्ण विश्वास अर्जित कर दिया है। यह मामूली नहीं, अमिट ऐतिहासिक अवसर का अन्यान्य अन्वय है।

लोकोन्मुखी तंत्र और समय के मंत्र का सदाबहार सौजन्य है। एक वह समय था जब मोदी का सत्तासीन होना सारी राजनीतिक पार्टियों को सांप सूंघ गया था लेकिन धीरे-धीरे बड़े धैर्य और संयम से मोदी ने नाड़ी-वैद्य बनकर अपनी निस्वार्थ जनकल्याणी भावना से संकल्पबद्ध मनौती ले अपना मिशन प्रारम्भ किया और अपने साथियों के साथ हम सफर यात्रा शुरू कर दी।

यात्रा तो औरों ने भी शुरु की थी किन्तु इस यात्रा को किसी ने तमाशबीन नहीं माना। अपने द्वारा स्थापित मन्दिर के अपने ही ठाकुरजी की तरह सबने इस यात्रा का दरसाव करते यथोचित मान दिया और अपनी मान्यजनक आस्था-उम्मीदगी की शुभाकांक्षा व्यक्त की तो देखते-देखते सब राजनीतिक दल छछूंदर की तरह खंखेर दिये गये जो अपने-अपने पोतड़ों में तीसमारखां बने दहाड़ के पहाड़ बना रहे थे।

अगस्त का महीना उन अनेक बहादुरों का अविस्मरणीय कुंभ है जो देश-प्रेम के खातिर बावले-दीवाने बन स्मरणीय पतंगों की तरह जूझते हुए आजादी का प्राकट्य-प्रकाश लाने को हनुमन्ती हिम्मत और साहस दिखाते शहीद हो गए। आओ, हम उन्हें सलाम करें और आगे के भारत को ललाम बनाने की मशाल थामे 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' गान का जनगणमन करें।

विकल्प मेहता उच्च शिक्षा हेतु अमेरिका रवाना

बड़ीसादड़ी निवासी एवं बीकानेर प्रवासी विकल्प मेहता एम. एस. (मास्टर्स इन बिजनेस एनालिसिस) करने 08 अगस्त को

अमेरिका के लिए रवाना हुए। दिल्ली के इन्दिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट पर जेके पेपर्स के सीईओ ए. एस. मेहता (मौसू), डॉ. सतीश मेहता (पिता), डॉ. कविता मेहता (माता), अनिशा जैन (पत्नी) ने उन्हें विदा किया। इससे पूर्व दिल्ली में उनकी मौसी श्रीमती तृप्ति तथा भव्य मेहता ने तिलक लगाकर निवास से विदाई दी।

विकल्प पूर्व में भीलवाड़ा में सेमसंग मोबाइल में प्रबन्धक के पद पर कार्यरत थे। उन्होंने अध्ययन के दौरान फ्रांस में भी उच्च शिक्षा प्राप्त की थी एवं यूरोप के दस से अधिक देशों की यात्रा कर अनुभव संचित किया। यह उल्लेखनीय है कि विकल्प अमेरिका के शिकागो में यूनिवर्सिटी ऑफ इलनोभ से एम. एस. करेंगे।

उदयपुर में डॉ. महेन्द्र भानावत (नाना), डॉ. तुक्तक-रंजना (मामा-मामी), डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत (मामा), डॉ. कहानी-जितेन्द्र मेहता (मासी-मौसू), काव्या, युक्ता, शब्दांक तथा अर्थांक ने उन्हें अमेरिका जाने पर बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित कीं। बीकानेर में भी अनिल-कल्पना, प्रमोद-अनिता नागौरी एवं सुधा नागौरी ने बधाई दी। बड़ीसादड़ी से सुमित्रा, पुष्पा, अमृत, श्यामप्रकाश व परिवार के सगे सम्बन्धियों ने दूरभाष एवं वाट्सअप से बधाई सन्देश प्रेषित किये।

विभिन्न मित्रों, सहपाठियों, परिचितों ने स्वागत करते हुए उनके प्रति शुभकामनाएं प्रेषित की। भीलवाड़ा में भी डीलर व सेल्स कर्मचारियों ने साफा पहनाकर स्वागत किया। श्वसुर परिवार से राकेश-सुनीता तथा कृति बैंगानी द्वारा भी भावभीनी बधाई दी गई। विकल्प पेप्सीको (इलाहाबाद) व लावा मोबाइल (उदयपुर) में एरिया सेल्स मेनेजर के पद पर भी सेवाएं दे चुके हैं।

पोथीखाना

लघुकथा की उलझी गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास

-राधेश्याम 'भारतीय'-

समकालीन हिन्दी लघुकथा अर्थात आज हिन्दी लघुकथा का स्वरूप क्या है और समाज के यथार्थ को व्यक्त करने में कितनी समक्ष है।

इस दृष्टि से जानेमाने लघु कथाकार माधव नागदा ने अपनी सद्य कृति 'राजस्थान की हिन्दी लघुकथा में सामाजिक सरोकार' में उन रचनाओं को सामने लाने का प्रयास किया है जो समाज को एक दिशा देती जान पड़ती हैं। इसके लिए लेखक ने अनेक लघुकथा-संग्रहों का गहन अध्ययन और उनका विश्लेषण करते हुए उनके केन्द्रीय भाव, शिल्प और कथाकार के मंतव्य को पकड़ने की कोशिश की। इस दृष्टि से आलोचक नागदा ने पुस्तक की सामग्री को तीन खण्डों में विभाजित किया- आलेख खण्ड, समीक्षा खण्ड और साक्षात्कार खण्ड।

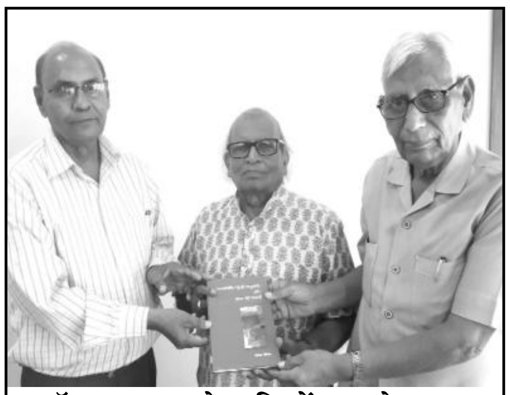

डॉ. भानावत को कृति भेंट करते माधव नागदा और कमर मेवाड़ी

'शिल्प : रचनाकार का आन्तरिक लोकतंत्र' स्त्री-पुरुष में परस्पर प्रेम सम्बन्ध जीवन का आधार है। इसी आधार को मजबूती प्रदान करने के लिए 'हिन्दी लघुकथाओं में प्रेम' आलेख प्रस्तुत किया गया ताकि प्रेम से सामाजिक समरसता लाई जा सके। वे लिखते हैं- लघुकथा के तीन अंग हैं- कथ्य, शिल्प और लक्ष्य। शिल्प ; कथ्य और लक्ष्य के मध्य सेतु का कार्य करता है। शिल्प जितना आकर्षक होगा पाठक की आवाजाही उतनी ही अधिक होगी।

लघुकथा में शीर्षक का अपना महत्व है। शीर्षक न केवल ध्यानाकर्षक व उत्सुकता जगाने वाला हो बल्कि लघुकथा के केन्द्रीय विचार का संवाहक भी होना चाहिये। लघुकथा का आरम्भ और अन्त भी शिल्प का एक हिस्सा है। प्रभावी आरम्भ और सटीक समापन अलग कौशल की मांग करता है। एक बेहतर लघुकथा के लिए यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि लघुकथा कहानी की भांति मजबूत रीढ़ वाली नहीं होती कि वह अपने ऊपर बोझ (विस्तार) उठा सके।

इसके लिए संक्षिप्तता, सांकेतिकता व कलात्मकता का सन्तुलन आवश्यक है। नागदाजी शिल्प के बारे में स्पष्ट कहते हैं- 'दरअसल शिल्प का उपयोग जमूरे की डुगडुगी के रूप में नहीं होना चाहिये। शिल्प मकबरे के ऊपर की नक्काशी नहीं है बल्कि उस भवन की वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना होता है जिसमें जिन्दगी की हलचल निवास करती है। यहां विचारों की गरमाहट, मानवीय संवेदनाओं की खुशबू, लोकजीवन के संघर्ष, रिश्तों के बनते-बिगड़ते समीकरण और समाज की धड़कनें आबाद रहती हैं। इन सबके बिना खालिस शिल्प का कोई अर्थ नहीं।'

'लघुकथा के रंगमंच पर भाषा का इन्द्रधनुष' आलेख पढ़कर पता चलता है कि भाषा रचना की जान होती है और रचनाकार पहचान। भाषा कथ्य के अनुरूप अपना चोला बदलती है और शैली के अनुसार अपना श्रृंगार। भाषा का प्रयोग सीधे पाठक के दिल पर दस्तक देता है। भाषा का सटीक प्रयोग सामान्य कथ्य को भी ऐसी ऊंचाई पर ले जाता है जो कल्पना से परे होता है।

'हिन्दी लघुकथाओं में यथास्थिति का अतिक्रमण' पढ़ते हुए एक बात सामने आई कि जो लघुकथाएं मात्र यथास्थितिवादी हैं। वे न तो पाठक की संवेदनाओं को झकझोरती हैं और न ही उनमें विचारोत्तेजना उत्पन्न करने की शक्ति होती है। वे मनुष्य के संघर्ष को, उसकी परिवर्तनकामी चेष्टा को आवाज नहीं देती बल्कि क्षण भर के लिए गुदगुदाकर रह जाती हैं। गुदगुदाना या सिर्फ मनोरंजन करना ही साहित्य का मकसद नहीं।

इसी बात को और ज्यादा स्पष्ट करने के लिए माधव नागदा ने बेलिन्स्की के विचारों को यहां रखा है- 'यदि कोई कलाकृति केवल चित्रण के लिए जीवन का चित्रण करती है, यदि उसमें वह आत्मगत शक्तिशाली प्रेरणा नहीं है जो युग में व्याप्त भावना से नि:सृत होती है, यदि वह पीड़ित हृदय से निकली कराह या चरम उल्लसित हृदय से फूटा गीत, यदि वह कोई सवाल या सवाल का जवाब नहीं तो वह निर्जीव है।'

लघुकथा के आदर्श और यथार्थ किस रूप में हों- जिस रचना में आदर्श यथार्थ के साथ रच-पककर, एकमेक होकर अभिव्यक्त होता है, वह दिशापरक होता है। ऐसी रचना दर्पण न होकर समाज का दीपक होती है अर्थात आदर्श थोपा हुआ न हो बल्कि लघुकथा में से ही उपजे यही श्रेष्ठकर है।

समीक्षा खण्ड में समीक्षक ने अनेक पुस्तकों की समीक्षा कर नीरक्षीर विवेक का परिचय दिया है और उन तत्वों को सामने रखने का भरसक प्रयास किया है जिनमें विधा सम्बन्धी अवधारणाओं को बल मिलता है।

माधव नागदा के पास जीवन के अनुभवों के साथ-साथ विधा की गहरी समझ है। साक्षात्कार खण्ड में कुंवर प्रेमिल, हरिशंकर शर्मा, सीमा जैन, डॉ. लता अग्रवाल ने माधव नागदा की उसी गहरी सोच से रू-ब-रू करवाया है।

पुस्तक का समग्र अवलोकन करने पर कहा जा सकता है कि इस आलोचनात्मक पुस्तक के माध्यम से लेखक ने विधा सम्बन्धी उलझी गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास किया है। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए जो लघुकथाएं सामने रखी हैं वे वास्तव में श्रेष्ठ लघुकथाएं हैं।

सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर से प्रकाशित 191 पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य 500 रूपया है।

मैं सौभाग्यशाली हूं कि लेखन के क्षेत्र में मुझे कभी समझौतों का मुंह नहीं ताकना पड़ा। लिखता गया और छपता गया। मुझे अपनी तारीफ में कभी भी छद्म नाम से अथवा मित्रों से प्रतिक्रियाएं नहीं छपवानी पड़ीं। रचनाएं 'अभिवादन और खेद सहित' लौटकर भी आती थीं तो मैं जरूरी समझने पर उनका पुनर्लेखन कर अन्यत्र भेज देता। जिन सम्पादकों ने मेरी रचनाएं प्रकाशित कीं उनसे आरम्भ में मेरा कोई परिचय नहीं था।

धर्मयुग में जब मेरी कहानी 'मुक्तिपथ' छपी तो तत्कालीन सम्पादकजी मुझे जानते तक नहीं थे। सारिका में जब मैं छपा तो अवधनारायणजी मुद्गल से मुझे किसी से कोई सिफारिश नहीं करवानी पड़ी। इसी प्रकार हंस, वर्तमान साहित्य, पाखी, कथादेश, समकालीन भारतीय साहित्य आदि में मेरी जो रचनाएं प्रकाशित हुईं वे उनकी गुणवत्ता के कारण हुईं। हां, सम्बोधन के सम्पादक कमर मेवाड़ी मेरे परम मित्र हैं लेकिन उन्हें भी मैं अपनी रचनाएं उनके मांगने पर ही देता था। धीरे-धीरे कई सम्पादक मेरे मित्र बन गए परन्तु मैंने कभी भी अपनी मित्रता के कारण उन्हें धर्मसंकट में नहीं डाला। जो पुरस्कार या सम्मान मिले उनके लिए भी मैंने कोई जोड़-तोड़ नहीं की।

(सीमा जैन द्वारा माधव नागदा से की गई बातचीत से, पृष्ठ 179)

vedanta
transforming elements

पर्यावरण की देखभाल हमारी पहली प्राथमिकता है

73वें स्वतंत्रता दिवस पर देश की अग्रणी धातु और खनन कम्पनी बनकर हम इस प्रतिबद्धता को दोहराते है...

HINDUSTAN ZINC

Zinc & Silver of India

Regd Office: Yashad Bhawan, UDAIPUR-313 004 PBX No. 0294-6604000, CIN-L27204RJ1966PLC001208, www.hzlindia.com

कैट फाइनेंशियल का संचालन शुरू

उदयपुर। कैटरपिलर फाइनेंशियल सर्विसेस इंडिया प्रा. लि. (कैट फाइनेंशियल इंडिया), कैटरपिलर इंक की पूर्ण सहायक कंपनी ने भारत में अपने संचालन के शुभारंभ की घोषणा की। कैट फाइनेंशियल इंडिया का मुख्यालय बैंगलोर में स्थित है जो कैटरपिलर के दो भारतीय डीलरों, जीएमएमसीओ लि. और गेनवेल कोमोसेल्स प्रा. लि. के साथ कैट उत्पादों की एक श्रेणी के लिए अनुकूलित वित्तीय सेवाओं के लिए वन स्टॉप सॉल्यूशन प्रदान करके भारत में ग्राहकों का समर्थन करेगा।

कैटरपिलर फाइनेंशियल सर्विसेज एशिया पैसिफिक के वाईस प्रेसिडेंट शेली बैरेट ने कहा कि भारत में हमारी उपस्थिति न केवल उभरते क्षेत्र में कैटरपिलर के विकास में मदद करेगी बल्कि ग्राहकों के लिए अलग-अलग तरह की वित्तीय सेवाएं प्रदान कर प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त और अवसर भी बनाएगी। यह सेवाएं डेटा और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हुए ग्राहकों के अनुभव को समावेशीए सहज और पारदर्शी बनाएगी। कैटरपिलर फाइनेंशियल सर्विसेस इंडिया प्रा.लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर क्रिस्टोफर ली फरार ने बताया कि कंस्ट्रक्शन और इंफ्रास्ट्रक्चर भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण एवं प्राथमिकता वाले क्षेत्र हैं और इस कैट फाइनेंशियल कार्यालय का शुभारंभ स्थानीय ग्राहकों के लिए हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता और इसे मजबूत करता है। हम अपने डीलरों के साथ काम कर यह सुनिश्चित करते है कि हमारे वित्तीय समाधान हमारे ग्राहकों तक आसानी और सही समय सीमा में पहुंचें।

नई पीढ़ी की सेवाओं का व्यापक पोर्टफोलियो लॉन्च

उदयपुर। तैयार लुब्रिकेंट के बाजार की अग्रणी कंपनी शेल लुब्रिकेंट्स ने बी2बी क्षेत्र के लिए अपनी नई पीढ़ी की सेवाओं का व्यापक पोर्टफोलियो लॉन्च किया है। यह पोर्टफोलियो ग्राहकों को सभी उद्योगव्यापी मूल्य श्रृंखला में प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी के लिहाज से उन्नत समाधानों का व्यापक समूह उपलब्ध कराता है। नेक्स्टजेन बी2बी सर्विसेज पोर्टफोलियो के साथ शेल ओइएम के लिए उद्योग के लिहाज से प्रासंगिक और बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले उत्पाद बनाने के अपने मिशन को जारी रख रही है। नए लॉन्च किए गए पोर्टफोलियो में शेल के समाधानों की संपूर्ण श्रृंखला को शामिल किया गया है जिसमें ल्यूबएनालिस्ट, ल्यूबएडवाइजर, ल्यूबचैट, ल्यूबकोच, मशीनमैक्स, ल्यूबमास्टर, ल्यूबमैच, ल्यूब मैनेजमेंट प्रोग्राम और ल्यूब एक्सपर्ट शामिल हैं।

मानसी त्रिपाठी, कंट्री हेड, शेल लुब्रिकेंट्स इंडिया ने कहा कि'लुब्रिकेंट उद्योग खास तौर पर विनिर्माण और खनन जैसे बुनियादी क्षेत्रों के बी2बी औद्योगिक क्षेत्र में दक्षता को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाता है। अपनी बी2बी सेवाओं को एक पोर्टफोलियो में एक साथ पेशकर हम दृढ़ता को बढ़ावा दे रहे हैं जिसके दम पर ग्राहक परिचालन दक्षता संबंधी चुनौतियों का सामना कर सकते हैं और कारोबारी लक्ष्यों को हासिल कर सकते हैं। ये सेवाएं हमारे साझेदारों को अब और भविष्य में उनकी प्रतिस्पर्धी दक्षता बढ़ाने में मदद करेंगे।

प्रवीण नागपाल, मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी, शेल लुब्रिकेंट्स इंडिया ने कहा कि परिचालन और कारोबार संबंधी महत्वपूर्ण मुद्दों का समाधान करने में अपने साझेदारों और ग्राहकों का समर्थन करना हमारे सबसे महत्वपूर्ण प्रयासों में से एक है। आज की कंपनियां काफी तेजी से लंबी अवधि के लागत संबंधी लाभों के लिए संभावनापूर्ण रखरखाव के महत्व के प्रति जागरूक हो रही हैं।

‘कैस्ट्रॉल इंडिया’ का रियलिटी शो लॉन्च

उदयपुर। ‘कैस्ट्रॉल इंडिया’ ने भारत में मैकेनिक्सग के लिये एक रियलिटी शो प्रसारित करने की घोषणा की। यह ‘कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक्सक कॉन्टेलस्ट’ का हिस्सा है। चार हिस्सों में बंटे इस शो को टेलीविजन एक्टकर रवि दुबे होस्ट करेंगे। यह शो हर शनिवार को ज़ी न्यूज़ पर रात 11.30 सहित ज़ी नेटवर्क पर प्रसारित किया जायेगा।

शो में उन 16 कार और बाइक मैकेनिक्स के सफर के बारे में बताया जायेगा जिन्होंने कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक्सि 2019 का खिताब जीतने के लिये मुकाबला किया है।

नर्सिंग छात्रों के लिए कार्यशाला आयोजित

उदयपुर। साई तिरूपति यूनिवर्सिटी, उदयपुर के वेन्कटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग के एमएससी नर्सिंग छात्रों के तत्वावधान में राज्यस्तरीय वर्कशॉप का आयोजन ‘इम्पेक्ट ऑफ सोशल मीडिया ऑन नर्सिंग प्रोफेशन’ थीम पर किया गया। इसमें राज्य के नर्सिंग छात्रों एवं फेकल्टी मेम्बर, प्रिंसिपल ने भाग लिया।

अध्यक्षता पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), उमरड़ा के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने की। प्रिंसीपल विजयसिंह रावत ने इम्पेक्ट ऑफ सोशल मीडिया के प्रभाव एवं दुष्प्रभाव की जानकारी दी। इस दौरान एम्स जोधपुर, एस. एन. मेडिकल कॉलेज जोधुपर, आरकोन भीलवाड़ा, जीएनसी एमबी हॉस्पिटल उदयपुर, जीएनसी उदयपुर तथा पीआईएमएस उमरड़ा के रिसोर्स पर्सन ने अपने विचार व्यक्त किये।

ड्यू एरिना में पहुंचा पबजी मोबाइल

उदयपुर। बेवेरेज ब्रांड माउंटेन ड्यू की बेहद कामयाब वार्षिक गेमिंग प्रॉपर्टी ड्यू एरिना पर अब भारत का सबसे बड़ा गेम पबजी मोबाइल भी टूर्नामेंट के मोबाइल गेमिंग के हिस्से के रूप में पहुंच चुका है। पबजी मोबाइल को स्मार्टफोन पर खेलने के लिहाज से तैयार किया गया है।

नसीब पुरी, निदेशक, माउंटेन ड्यू एवं एनर्जी, पेप्सिको इंडिया ने कहा कि प्रतिभागियों को 21 अक्टूबर तक हर दिन पबजी बैटल रॉयल में भाग लेने का मौका मिलेगा। हर दिन 101 मैच खेले जाएंगे और पहले 100 मैचों के विजेता को डेली क्वालीफायर में जाने का अवसर मिलेगा। माउंटेन ड्यू इस बार 31 लाख रुपये की पुरस्कार राशि के अलावा विजेताओं की कामयाबी को अपनी बोतलों पर भी दर्ज करेगा।

अक्षत राठी, प्रबंध निदेशक- ईएसएल इंडिया के ने कहा कि प्रतिभागियों को अपना पूरा नाम, पबजी कैरेक्टर का नाम, पबजी निकनेम, ईमेल, कॉन्टैक्ट नंबर और अपने शहर का नाम ड्यू एरिया की वेबसाइट पर दर्ज कर मैच के लिए रजिस्टर कराना होगा। उन्हें एसएमएस/ईमेल के जरिए पूरी जानकारी तथा अगला मैच जहां खेला जाएगा उसके पूरे लिंक के साथ उपलब्ध कराया जाएगा। चैंपियनशिप में भाग लेने की कोई फीस नहीं है। पबजी ड्यू एरिना टूर्नामेंट अलग-अलग मैप्स पर जैसे कि इरंगेल, सन्होक और विकेंदी पर सोलो मैच भी खेले जाते हैं। हर दिन क्वालीफायर्स 5000/रु के वाउचर जीतेंगे और साथ ही उन्हें ड्यू एरिया ग्रैंडफिनाले में भाग लेने का मौका भी मिलेगा।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय)

GRADE 'A' ACCREDITED BY NAAC

सरस्वती देवयन्तो हवन्ते

प्रतापनगर, उदयपुर - 313001 (राजस्थान) फोनः 0294-2492441 फैक्स : 0294-2492440
E-mail : admissions@jrnrvu.edu.in

प्रवेश प्रारम्भ-2019-20

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, फोन : 0294-2413029|2410776, मो. 9829160606

Faculty of Social Sciences & Humanities

•BA •MA •एम.फिल डिप्लोमा कोर्सेज : •पीजी डिप्लोमा इन जी.आई.एस. एण्ड रिमोट सेन्सिंग, बी.जे.एम.सी., पंचगव्य पद्धित (थैरेपी)।
सर्टिफिकेट कोर्सेस : •स्पोकन इंग्लिश, प्रोफिशियंसी इन इंग्लिश एण्ड कम्यूनिकेशन स्किल्स, कल्चर ऑफ राजस्थान, रिसर्च मेथड्स एण्ड डेटा एनालिस्ट, ह्युमन राइट्स।

Faculty of Commerce फोन : 0294-2413029,2410776, मो. 9460275655

•B.Com. •BBA •M.Com. •M.I.B. •एम.फिल., •मास्टर ऑफ एन.जी.ओ. मैनेजमेन्ट।
डिप्लोमा कोर्स : •पी.जी. डिप्लोमा इन ट्रेनिंग एण्ड डवलपमेन्ट।
सर्टिफिकेट कोर्सेस : •प्लास्टिक प्रोसेसिंग एण्ड मेन्युफेक्चरिंग स्किल्स, टेली, गुड्स एण्ड सर्विस टैक्स (जी.एस.टी.)।

Faculty of Science फोन : 9461179656, 9461109371

•B.Sc. (Physics, Mathematics, Chemistry, Statistics, Computer Science, Botany, Zoology)
•M.Sc. Chemistry (Inorganic, Organic, Physical, Industrial)
•M.Sc. Mathematics

ज्योतिष विज्ञान विभाग, मो. 9460030605

•एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान •डिप्लोमा ज्योतिष •डिप्लोमा वास्तु •प्रमाण पत्र-ज्योतिष, वास्तु, हस्तरेखा, पूजा पद्धति कर्म काण्ड, वैदिक संस्कार संस्कृति (रविवार)

Evening College मो. 9829332300

बी.ए., बी.कॉम, एम.ए., एम.कॉम सभी विषय, एम.ए., एम.एस.सी. (मनोविज्ञान) एम.ए. (म्यूजिक), बी.लिब, एम.लिब, बी.एड. (स्पेशल एम.आर.), डी.सी.बी.आई, डी.एड (आर.सी.आई से मान्यता प्राप्त), पीजी डिप्लोमा इन गाइडेंस एवं कांउसलिंग, बी.जे.एम.सी. एवं डी.जे.एम.सी.।
Department of Physical Education Phone: 9352500445
•Diploma in Yoga •M.A. in Yoga •M.A. In Physical Education

Department of Physical Education मोबाइल : 9829943205, 9352500445

•मास्टर ऑफ फिजिकल एजुकेशन (M.P.Ed.) •MA (YOGA Education)

Department of Law मोबाइल 9414343363

•LL.B.(3 Years) •LL.M. (2 Years) •B.A.LL.B (5 Years) •PGDCL •PGDLFS •PGDLL

Department of Physiotherapy फोन : 0294-2656271 मो. 9414234293

•Master of Physiotherapy •Bachelor of Physiotherapy
•Fellowship in palliative care and oncology rehabiliatation
•Fellowship in neurological rehabiliatation

Faculty of Computer Science & Information Technology

फोन : 2494227, 2494217, मोबाइलः 9887285752, 9414737125

•MCA •M.Sc. (Computer Science)
•PGDCA •BCA • MCA (Lateral Entry)

Rajasthan Vidyapeeth Technology College

मो.9950304204 फोनः 0294-2490210

Diploma in Engineering (Polytechnic)
• Civil Engineering • Electrical Engineering • Mechanical Engineering
• Electronic Engineering & Communication Engineering
• Computers Science Engineering

Department of Pharmacy (फोन 0294-2492440, 9414869044)

• D. Pharma (Diploma in Pharmacy)

Institute of Rajasthan Studies (फोन 0294-2491054)

•M.A.. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)
•PG Diploma - पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)

Udaipur School of Social Work (फोन 0294-2491809)

•MSW •PG Diploma-HRM • Rural Development (PGDRD)
•PG Diploma- •NGO Management • Talent Managemnt

Directorate of Janshikshan & Extension Programme

(फोन : 2490723, 9414737125)

• PG Diploma in Criminalogy & Police Science
• Diploma in Criminalogy & Police Science

School of Agricultural Sciences

• B.Sc. (Hons.) Agriculture (कृषि) • Diploma Course

Department of Travel. Tourism & Hospitality

Faculty of Management Studies 9950489333

Course Name	Duration of Course	Eligibility
BBA (Tourism & Travel) with Specialization in Hospitality	3 Years	12th Pass in any stream
Diploma in Hotel Management (Foord & Bevrage Service	1 Year	12th Pass in any stream
Diploma in Hotel Management (Food Production)	1 Year	12th Pass in any Stream

Girls College, Dabok

(फोनः 0294-2655223, मो. 9694881447)

•B.A.• B.Com.• B.Sc.• M.A. • M.Com • M.A. (Hindi, Pol. Sc., History, Geog, Sociology, Economics) • M.Com (Accountancy)
• Special classes for English Speaking and Computer Basics

R.V. Homeopathic Medical College & Hospital, Dabok

(फोन : 0294-2655974, 2655975, मोबाईल : 09414156701, 09351343740)

• बेचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी (BHMS)

Faculty of Management Studies (FMS)

(फोनः 0294-2490632 मोः 9461260408, 9782049628)

• MBA • MHRM

Note : For more information about the admission in various courses like minimum percentage, fee structure etc. please go through our website www.jrnrvu.edu.in, respective prospectus or contact concerned department

REGISTRAR

PIMS देश और प्रदेश के हर व्यक्ति को विश्व स्तरीय चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराता संभाग का सर्वश्रेष्ठ हॉस्पीटल व मेडिकल कॉलेज

24x7 EMERGENCY SERVICE आपातकालीन सुविधाएं उपलब्ध

14.50 लाख से अधिक मरीजों का सफल उपचार | 790 बेडेड हॉस्पीटल | 70 बेडेड आई.सी.यू. | 16 ऑपरेशन थियेटर

मल्टी सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पीटल

सबसे कम दरों पर सबसे बेहतर इलाज

PIMS हॉस्पीटल एण्ड मेडिकल कॉलेज, उमरड़ा, उदयपुर

जनरल स्पेशियलिटी सुविधाएं

- जनरल मेडिसिन
- जनरल सर्जरी
- हड्डी एवं जोड़ रोग
- टी.बी. चेस्ट एवं श्वास रोग
- नेत्र रोग
- नाक, कान, गला
- प्रसूति एवं स्त्री रोग
- त्वचा एवं चर्म रोग
- बाल चिकित्सा
- मनोरोग चिकित्सा

मल्टीसुपरस्पेशियलिटी सुविधाएं

- कार्डियक सर्जरी
- कार्डियोलॉजी
- न्यूरो सर्जरी
- कैंसर सर्जरी
- यूरोलॉजी
- प्लास्टिक एवं बर्न सर्जरी
- पीडिएट्रीक सर्जरी
- नेफ्रोलोजी

बी.आर. अग्रवाल
फाउण्डर
PIMS

हमारा लक्ष्य शिक्षा में गुणवत्ता लाना व छात्रों को कौशलयुक्त बनाना है – बी.आर. अग्रवाल

PIMS के माध्यम से हमारा लक्ष्य मेडिकल छात्रों को गुणवत्तापूर्ण मेडिकल शिक्षा देना है, जिससे वह अच्छे डॉक्टर्स बनकर समाज व देश की सेवा कर सके। PIMS में MBBS छात्रों के शिक्षण व प्रशिक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है, इसके लिए इंस्टिट्यूट में अनुभवी व योग्य फैकल्टी के साथ साथ मानक उपकरण व आवश्यक मापदंड स्थापित किये गए हैं।

आमजन हेतु उपलब्ध सरकारी सुविधाएं

- भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना
- RBSK राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम
- राजस्थान एड्स कन्ट्रोल सोसायटी
- परिवार नियोजन एवं जननी सुरक्षा योजना
- DOTS डॉट्स टी.बी. एवं क्षय रोग

डायग्नोस्टिक विश्वस्तरीय मशीनों द्वारा जांच व निदान, MRI (1.5 T), CT-Scan (128 Slice), CD4 Count की सुविधा उपलब्ध, अल्ट्रासाउण्ड, इको कार्डियोग्राम, एलर्जी टेस्ट (Phadia 100), Hb-Vario (HPCL), ADVIAXP (CLIA), TB-PCR (Gene Xpert)

▸ मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर ▸ सी.सी.यू. आई.सी.यू. ▸ पी.आई.सी.यू. ▸ एन.आई.सी.सी.यू. ▸ एन.आई.सी.यू. ▸ बर्न आई.सी.यू. ▸ ब्लड बैंक

साई तिरूपति यूनिवर्सिटी, उदयपुर

- पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस — MBBS
- वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग — B.Sc., M.Sc. (नर्सिंग)
- वेंकटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग — GNM
- वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ फिज़ियोथेरेपी — BPT
- वेंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी — D. Pharmacy

कॉलेज जानकारी हेतु सम्पर्क करें: Mob. : 9549452185, 9549450553

PIMS पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, उमरड़ा, उदयपुर

अम्बुआ रोड़, उमरड़ा, उदयपुर (राज.) 313015 | Phone : 0294-3010000, Mob.: 8696440666 Email: info@pacificmedicalsciences.ac.in Web: www.pacificmedicalsciences.ac.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर – 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल – 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।